International Journal of Humanities and Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 29-03-2025, Accepted: 28-04-2025, Published: 14-05-2025
Volume 11, Issue 3, 2025, Page No. 6-9

वर्तमान वैश्विक समस्याओं का एक महत्वपूर्ण समाधान –माता भगवती देवी शर्मा का जीवन वैशिष्ट्यः मातृतत्व के विशेष संदर्भ में

सौरभ श्रीवास्तव[1], डॉ. कृष्णा झरे[2], डॉ. आशीष कुमार[3]

[1] शोधार्थी, प्राच्य अध्ययन, धर्म अध्ययन एवं दर्शन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

[2] सह प्राध्यापक, प्राच्य अध्ययन, धर्म अध्ययन एवं दर्शन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय,हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

[3] सहायक प्राध्यापक, पर्यटन प्रबंधन विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उत्तराखण्ड, भारत

सारांश

वर्तमान समय में समाज जिन विभिन्न चुनौतियों और समस्याओं से जूझ रहा है, उनका मूल कारण अनैतिकता से युक्त संकीर्ण भौतिकवादी मानसिकता को माना जा सकता है। इन विभीषिकाओं का समाधान भावनाओं और संवेदनशीलता के जागरण द्वारा संभव है। इस संदर्भ में, मातृतत्व की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह संवेदनाओं की उत्कृष्टतम अभिव्यक्ति का प्रतीक है। अतः मातृतत्व का पुनर्स्थापन वर्तमान सामाजिक संकटों के निराकरण में सहायक हो सकता है (शर्मा, एस. (2011))।

इस शोध पत्र में अखिल विश्व गायत्री परिवार की आधारशिला, माता भगवती देवी शर्मा के जीवन को मातृतत्व के विशेष संदर्भ में विश्लेषित किया गया है। वे केवल एक संगठनकर्ता, लेखिका, कवयित्री, गायिका, कुशल वक्ता, सम्पादिका, साधिका और शिष्या ही नहीं थीं, बल्कि इन सभी भूमिकाओं से बढ़कर वे वात्सल्यमयी, करुणामयी, उदार, और आत्मीयता से भरपूर माँ थीं।माताजी ने अपने जीवन के माध्यम से व्यक्ति, परिवार और समाज के उत्थान हेतु आदर्श परिपाटी की स्थापना की। उनके गीतों, लेखों, उद्बोधनों और पत्रों में पारिवारिक और सामाजिक जीवन में मातृतत्व के स्वरूप और उसकी अभिव्यक्ति को समझा जा सकता है। उन्होंने मातृत्व की भावना को अपने जीवन द्वारा व्यावहारिक रूप में प्रस्तुत किया, जिससे जो भी उनसे मिला, वह उनके स्नेह और संरक्षण से अविभाज्य रूप से जुड़ गया।

उनका जीवन एक प्रेरणास्रोत रहा है, जो सम्पूर्ण मानवता के प्रति उदारता, संवेदनशीलता और आध्यात्मिकता की गहराई को दर्शाता है। उनका व्यक्तित्व वैश्विक समाज को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है, जिससे प्रेरणा प्राप्त कर एक विशिष्ट और सार्थक जीवन जिया जा सकता है।

मूल शब्दः मातृतत्व, जीवन वैशिष्ट्य, आदर्श नारी, माता भगवती देवी शर्मा, गायत्री परिवार

नैतिकता से शून्य और भौतिकवादी मानसिकता को वर्तमान जीवन की सभी समस्याओं की जड़ माना जा सकता है। यह मानसिकता व्यक्ति को स्वहित को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करती है, भले ही इसके लिए दूसरों को कष्ट सहना पड़े। इसका परिणाम संघर्ष, क्लेश और जीवन को दुःखमय बनाने के रूप में सामने आता है। प्राचीन भारतीय समाज में यह समस्याएँ नहीं थीं, क्योंकि उस समय व्यक्तियों में भावनात्मकता और संवेदनशीलता अधिक थीं। भावनाओं की उत्कृष्ट अवस्था मातृत्व में देखी जाती है। इसलिए, मातृत्व का पुनर्स्थापन आज की समस्याओं का समाधान करने में सहायक हो सकता है (शर्मा, एस. (2011)।

पं. श्रीराम शर्मा के अनुसार, मातृत्व की साधना जीवन को सुधारने और सशक्त बनाने का मार्ग है। चेतना ही "मातृत्व" का मूल आधार है। यह चेतना, ज्ञान और शक्ति का स्वरूप है, जो सभी सृष्टि का सार है। यह सृजन की शक्ति है और प्रत्येक जीव के जीवन का आधार है। बाल्यावस्था में शिशु के लिए माँ का भावनात्मक संबंध सबसे प्रमुख होता है; विचार बाद में विकसित होते हैं। मातृत्व मुख्यतः भावनात्मक अनुभव है।

ब्रह्मवर्चस (2010) के अनुसार, मातृत्व जीवन और संसार की सभी संवेदनाओं और संभावनाओं का मूल है। यह सृजन की उर्वरता का स्रोत है और सभी रिश्तों और संबंधों का आधार है। श्रीदेव्यथर्वशीर्षम् में माँ के व्यापक स्वरूप का वर्णन मिलता है, जिसमें उसे आनंद, विज्ञान, ब्रह्म और पूरे जगत का स्वरूप बताया गया है।

इतिहास में कई महान व्यक्तित्व मिलते हैं, जिनमें मातृत्व ने प्रेरणा दी और उनके जीवन को आकार दिया। माता अदिति, सीता, पार्वती, महाकाली, महासरस्वती, महागौरी, माँ शारदा, श्रीमाँ और माँ आनंदमयी जैसे व्यक्तित्व मातृत्व के दैवीय रूप का परिचय देते हैं। इसी क्रम में माता भगवती देवी शर्मा (अखिल विश्व गायत्री परिवार) का नाम भी लिया जाता है। उन्होंने अपनी आत्मीयता, प्रेम और मार्गदर्शन से मातृत्व को नया आयाम दिया। वे अखिल विश्व गायत्री परिवार की सह–संस्थापिका थीं और उन्होंने सामाजिक उत्थान के लिए अश्वमेध यज्ञों के माध्यम से वातावरण शुद्धिकरण और सांस्कृतिक प्रचार का नेतृत्व किया।

वंदनीया माताजी एक महान संत और गुरु थीं। वे अपने शिष्यों को उनकी परिस्थितियों के अनुसार मार्गदर्शन देती थीं और उनकी क्षमता पहचानने में अद्वितीय थीं। इसलिए, मातृत्व के संदर्भ में उनके जीवन की विशेषताओं को प्रस्तुत करना वर्तमान शोध का उद्देश्य है।

माता भगवती देवी शर्मा का मातृतत्व से परिपूर्ण जीवन दर्शन

माता भगवती देवी शर्मा, स्नेह, श्रद्धा, शक्ति और मातृसत्ता की प्रतीक, जन–जन में प्रचलित एक आदरणीय नाम हैं। उन्हें पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी (आचार्य श्री) भी स्नेहपूर्वक "माताजी" कहकर संबोधित करते थे। उनका जीवन समर्पण, ममता और प्रेम का विस्तार करते हुए एक अद्वितीय प्रेरणादायक यात्रा का परिचय देता है। उनकी जीवन यात्रा मातृत्व और निस्वार्थता का दुर्लभ और प्रेरक उदाहरण है (ब्रह्मवर्चस. (2010)।

माता भगवती देवी शर्मा का जन्म 20 सितंबर, 1926 को आश्विन कृष्ण संवत 1982 में आगरा के लेडी लॉयल अस्पताल में हुआ। वे श्री जसवंत राय जी और श्रीमती रामप्यारी शर्मा जी के परिवार की चौथी संतान थीं। उनका जीवन मातृत्व की भावना और अद्वितीय आध्यात्मिक स्वरुप का परिचायक है (ब्रह्मवर्चस. (2010)।

1. बाल्यकाल एवं साधना

माता भगवती देवी बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति वाली थीं। जब वे मात्र चार वर्ष की थीं, उनकी माता का स्वर्गवास हो गया, जिससे उनका बालमन गहरे भावनात्मक अनुभवों से गुज़रा। परिवार में बड़े भाई और बहन उन्हें स्नेहपूर्वक 'लाली' कहकर पुकारते थे (ब्रह्मवर्चस, (2013)।

अपने बाल्यकाल में उन्होंने सहज रूप से आध्यात्मिकता को अपनाया। उन्होंने स्वयं अपनी पूजा स्थली में भगवान शंकर की स्थापना की और नित्य पूजा–अर्चना करती थीं। सूर्य की ओर देखकर ध्यान लगाना उनकी दिनचर्या का हिस्सा था, जो परिवार के लोगों के लिए आश्चर्यजनक था, क्योंकि किसी ने उन्हें यह सिखाया नहीं था। उनकी ईश्वर आराधना पूरी तरह से स्वाभाविक और आत्म स्फूर्ति थी, जो उनके भीतर गहरे आध्यात्मिक संस्कारों की झलक दिखाती थी (ब्रह्मवर्चस, (2013)।

2. आचार्य श्री की लीला सहचरी

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी (आचार्य श्री), जो आगरा के आवंलखेड़ा ग्राम के निवासी थे, स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय योगदान देने वाले एक महान सेनानी थे। उनके जीवन का उद्देश्य मनुष्यता के समक्ष एक आदर्श प्रस्तुत करना था। ऋषि युग्म का शुभ परिणय फाल्गुन शुक्ल सप्तमी, विक्रम संवत 2001, अर्थात 18 फरवरी 1945 को संपन्न हुआ। इस पवित्र मिलन के साथ मातृत्व की स्नेहमयी भावनाएँ अपने स्वरूप और विस्तार की दिशा में अग्रसर हुईं (पंड्या, (2002)।

वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा ने अपने जीवन में पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा निर्देशित उच्च आदर्शों को अपनाया और उन्हें अपने कार्यों में व्यावहारिक रूप से उतारा। उन्होंने अपने परिवार एवं समाज के प्रति प्रेम, स्नेह और अपनत्व का भाव रखते हुए इन आदर्शों को क्रियान्वित किया। उनके समर्पण और सेवा का प्रमुख उद्देश्य यही था कि हर व्यक्ति को आध्यात्मिक रूप से सशक्त किया जाए और उसे सद्गुणों की दिशा में प्रेरित किया जाए। यही उनकी विशिष्टता थी, जो मातृत्व की भावना को विस्तार देती है (पंड्या, (2002)।

3. समर्पण और जिम्मेदारियों का निर्वहन

विवाह के पश्चात माता भगवती देवी शर्मा एक चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में उस जमींदार परिवार में पहुँचीं, जहाँ पूज्य आचार्य श्री पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी अत्यंत सादगीपूर्ण और कठिन जीवन व्यतीत कर रहे थे। उस समय वे अपने चौबीस वर्ष के चौबीस महापुरश्चरणों के उत्तरार्द्ध में थे (ब्रह्मवर्चस, (2013)। उन्होंने तपस्वी जीवन अपनाया था, जहाँ गाय को जौ खिलाकर, गोबर से पुनः जौ निकालकर रोटी और छाछ तैयार करना उनके कठोर साधना का एक हिस्सा था। इसके साथ ही, उन्होंने अखंड दीपक की रक्षा की और प्रत्येक आगंतुक का स्वागत घर की सीमित सुविधाओं में किया (ब्रह्मवर्चस, (2013)।

सन् 1959 से 1961 तक, जब पूज्य आचार्य श्री हिमालय प्रवास और गहन तपस्या में थे, तब माता भगवती देवी शर्मा ने परिवार की समस्त ज़िम्मेदारियाँ पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ निभाईं (ब्रह्मवर्चस, (2013)। सन् 1971 में, सप्तऋषियों की पावन भूमि सप्त सरोवर, हरिद्वार में शांतिकुंज की स्थापना के बाद, जब आचार्य श्री पुनः हिमालय प्रवास की ओर अग्रसर होने लगे, तब उन्होंने समस्त संगठनात्मक कार्यों और गतिविधियों की ज़िम्मेदारी माता जी को सौंपनी शुरू कर दी (ब्रह्मवर्चस, (2013))। बाह्य रूप से दृढ़ और योद्धा समान, जबकि आंतरिक रूप से संवेदनशील और शांत, आचार्य श्री ने इन दायित्वों का हस्तांतरण माता जी को सौंपा, जिसे उन्होंने सहजता और कुशलता से निभाया (ब्रह्मवर्चस, (2013))।

माताजी ने इन कठिन परिस्थितियों में भी अपनी आत्मीयता, सेवा, और मातृभाव से संगठन और समाज को सुदृढ़ करने में अद्वितीय भूमिका निभाई। उनके नेतृत्व में संस्थान ने एक सशक्त और प्रेरणादायी दिशा प्राप्त की।

4. आदर्श नारी एवं नारी जागरण अभियान

वंदनीया माताजी ने नारी जागरण अभियान का शुभारंभ करते हुए महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में अद्वितीय योगदान दिया। चौबीस देव कन्याओं को प्रेरित कर उन्होंने उन्हें कई गुना बढ़ाया और असंख्य टोलियाँ विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भेजीं। इस अभियान के तहत, नारी जागरण मंडलों और शाखाओं की स्थापना की गई, जो महिलाओं को आत्मनिर्भर, शिक्षित, स्वस्थ और जागरूक बनाने के उद्देश्य से कार्यरत रहीं (ब्रह्मवर्चस, (2013)।

पूज्य गुरुदेव के सहचरत्व और संरक्षण में माताजी ने देवकन्या प्रशिक्षण की व्यवस्था की, जिसके माध्यम से महिलाओं को उनके अधिकारों, संस्कृति और समाज में उनकी भूमिका के प्रति जागरूक किया गया। उन्होंने अखण्ड ज्योति पत्रिका के माध्यम से जन–जन तक नारी जागरण का संदेश पहुँचाया, जिससे समाज में महिलाओं के प्रति सकारात्मक परिवर्तन की लहर उठी। इसके साथ ही, विभिन्न शिविरों का आयोजन कर उन्होंने महिलाओं को प्रशिक्षित किया और उनके आत्मबल को सशक्त बनाया (ब्रह्मवर्चस, (2013)।

वंदनीया माताजी के दिव्य व्यक्तित्व में कर्तव्यपरायणता, मातृत्व, श्रद्धा–भक्ति, तितिक्षा, वैराग्य, साहस और ज्ञान जैसे दैवी गुणों का अद्भुत समावेश था। उन्होंने अपने जीवन में मातृभाव को सर्वोच्च स्थान दिया और समाज के उत्थान के लिए मातृशक्ति को जागृत करने का अनुपम कार्य किया। उनका योगदान नारी शक्ति की गरिमा को स्थापित करने वाला था और समाज में एक नई दिशा देने वाला सिद्ध हुआ।

5. लेखिका के रूप में

अक्टूबर 1959 में अखण्ड ज्योति पत्रिका के पृष्ठ 4 पर एक महत्वपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ— "अखण्ड ज्योति के उत्तरदायित्वों में परिवर्तन"। इस लेख में संपादक के रूप में भगवती देवी शर्मा का नाम अंकित किया गया, जिन्हें पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी (आचार्य श्री) की धर्मपत्नी के रूप में प्रस्तुत किया गया था। मात्र बत्तीस वर्ष की आयु में ही परम वंदनीया माताजी को यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंप दी गई थी, जो गायत्री परिवार की दिशा और कार्य प्रणाली में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुई। उन्होंने इस जिम्मेदारी को न केवल सहर्ष स्वीकार किया, बल्कि अपने अथक प्रयासों से इसे सार्थक भी बनाया। पत्रिका में प्रकाशित लेखों को इस भावनात्मक प्रेरणा के साथ लिखा गया कि वे पाठकों की अंतरात्मा को स्पर्श करें और उन्हें आध्यात्मिक उत्थान की ओर प्रेरित करें (शर्मा, भ. द. (1959)।

इसके अतिरिक्त, माताजी ने महिला जागृति अभियान मासिक पत्रिका (1975 से 1979 के मध्य) का संपादन किया और नारी जागरण अभियान की नींव रखी। इस आंदोलन को गति प्रदान करने में उन्होंने विशेष भूमिका निभाई, जिससे महिलाओं को जागरूक, शिक्षित और आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किए गए। उनका नेतृत्व नारी सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण योगदान था, जो समाज में सकारात्मक परिवर्तन लेकर आया (शर्मा, भ. द. (1959)।

एक संगठक के रूप में, सन् 1971 से 1990 के बीच परम वंदनीया माताजी ने आंदोलन की दिशा को प्रभावशाली रूप से सँवारा। उन्होंने मातृशक्ति के रूप में नेतृत्व करते हुए संगठन के कार्यों को व्यापक स्तर पर गति दी और समाज में एक सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (ब्रह्मवर्चस, 2013)।

6. संरक्षिका के रूप में

गायत्री जयंती के पावन अवसर पर, 2 जून 1990 को, जब वंदनीया माता जी के आराध्य पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी का महाप्रयाण हुआ, तब उन्होंने अपने भावनात्मक संतुलन को बनाए रखते हुए करोड़ों अनुयायियों को संबल प्रदान किया। माताजी ने अपने प्रेमपूर्ण सान्निध्य से सभी को यह विश्वास दिलाया कि यह दैवीय मिशन अडिग रूप से आगे बढ़ता रहेगा और कोई भी कठिनाई इसे हिला नहीं पाएगी (ब्रह्मवर्चस, 2013)।

1 से 4 अक्टूबर 1990 को शरद पूर्णिमा श्रद्धांजलि समारोह में 15 लाख से अधिक परिजनों की उपस्थिति में उन्होंने इस संदेश को और अधिक दृढ़ता के साथ जन–जन तक पहुँचाया। उनके नेतृत्व और संरक्षण में मिशन ने निरंतर प्रगति की। माताजी का मातृ स्वरूप उनके अनुयायियों के संरक्षण, पोषण, स्नेह और मार्गदर्शन में स्पष्ट रूप से दिखाई देता था। उन्होंने भावी पीढ़ी को नई कार्य योजनाओं और गतिविधियों के लिए तैयार किया, जिससे मिशन का उद्देश्य सामाजिक उत्थान और आध्यात्मिक जागरण की ओर अग्रसर हो सका (ब्रह्मवर्चस, 2013)।

7. देव संस्कृति दिग्विजय अभियान की प्रणेता

माताजी ने देव संस्कृति दिग्विजय अभियान के तहत प्रवासी भारतीयों के आग्रह पर, 1993 में अमेरिका, कनाडा और इंग्लैंड में अश्वमेध यज्ञों का आयोजन किया। उनका उद्देश्य न केवल भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता का प्रचार–प्रसार था, बल्कि प्रेम और संरक्षण के माध्यम से प्रवासी बच्चों को भारतीय मूल्यों से जोड़ना भी था (पंड्या, 2002)।

उस समय जब पूरा विश्व सांप्रदायिकता और जातिवाद की समस्याओं से संघर्ष कर रहा था, माताजी ने इस अभियान के माध्यम से समाज को एकता और समरसता का संदेश दिया। जयपुर में पहले अश्वमेध यज्ञ के बाद, 1994 तक उन्होंने 18 अश्वमेध यज्ञों का सफल आयोजन किया। इन आयोजनों ने विभिन्न मतों, धर्मों और जातियों के लोगों को एक मंच पर लाकर सामाजिक समरसता को बढ़ावा दिया। उन्होंने छुआछूत जैसी सामाजिक कुरीतियों को तोड़ते हुए सभी को एक पंक्ति में साथ बैठकर भोजन करने की प्रेरणा दी, जिससे समाज में एक नई चेतना जागृत हुई (पंड्या, 2002)।

उनका अंतिम अश्वमेध यज्ञ चित्रकूट में संपन्न हुआ। इसके बाद, 19 सितंबर 1994 को माताजी ने शांतिकुंज, हरिद्वार में अपने शरीर का त्याग कर दिव्य सत्ता में विलीन हो गईं। उनके द्वारा स्थापित यह अभियान न केवल भारतीय संस्कृति के गौरव को प्रतिष्ठित करने वाला था, बल्कि समाज को एकता, प्रेम और नैतिकता का मार्ग दिखाने वाला भी रहा (पंड्या, 2002)।

8. गायत्री परिवार के निर्माण में मातृतत्व की भूमिका

माता भगवती देवी शर्मा ने अपने ममत्व और स्नेह से गायत्री परिवार नामक विराट संस्था की नींव रखी, जो आज एक सशक्त सामाजिक और आध्यात्मिक संगठन के रूप में स्थापित है। वे इस संस्थान की संस्थापिका थीं और उन्होंने इसे नैतिक उत्थान, सामाजिक सुधार, और आध्यात्मिक जागरण के प्रति समर्पित किया। गायत्री परिवार का उद्देश्य व्यक्तिगत और सामूहिक उत्थान के माध्यम से समाज में सद्भाव, समृद्धि, और आध्यात्मिक प्रगति को बढ़ावा देना है। इस संस्था में मातृत्व, परिवार, धर्म, शिक्षा और सामाजिक न्याय जैसे महत्वपूर्ण मूल्यों को विशेष स्थान दिया गया है। इसके अंतर्गत ध्यान, प्रार्थना, धर्म, अध्यात्म और सेवा के विभिन्न आयामों को प्रमुखता दी जाती है। माता भगवती देवी शर्मा ने गायत्री परिवार के माध्यम से महिलाओं को धार्मिक, सामाजिक और मानसिक रूप से सशक्त करने के लिए विशेष अभियान चलाया। उन्होंने मातृभाव और समाज सेवा को एक नई ऊंचाई दी।

सारदा का मातृत्व प्रेम, सहिष्णुता, सेवा और सौहार्द एक नई सामाजिक संरचना का आधार बना (स्वामी ब्रह्मोशानंद, 2004), उसी तरह माता भगवती देवी शर्मा ने भी प्रेम, माधुर्य और अपनत्व के माध्यम से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने सामाजिक बुराइयों, कुरीतियों और असमानता के विरुद्ध संघर्ष करते हुए समाज को एकता, ममता और शुचिता के मार्ग पर अग्रसर किया। आज भी गायत्री परिवार माता भगवती देवी शर्मा के दर्शन, आदर्शों और साधनाओं को आत्मसात करते हुए आगे बढ़ रहा है और मानव सेवा एवं सामाजिक सुधार के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दे रहा है।

9. पत्रों के माध्यम से वात्सल्य पूर्ण मार्गदर्शन

पूज्य गुरुदेव एवं वंदनीया माताजी स्नेह, आत्मीयता, दया और करुणा की साक्षात प्रतिमूर्ति थीं। उनके परिजनों को लिखे गए पत्रों में इतनी गहन आत्मीयता और प्रेम व्याप्त होता था कि उन्हें पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता था मानो वे स्नेहपूर्वक सामने खड़े होकर दुलार कर रहे हों।

माताजी ने 2 मई 1971 को एक परिजन को लिखे पत्र में कहा— "आप हमें सगे बच्चों की तरह याद आते रहते हैं। अपनी अंतःकरण की भावनाएँ, अपना स्नेह किन शब्दों में व्यक्त करें?" एक अन्य पत्र में, 9 फरवरी 1971, उन्होंने भावनात्मक रूप से लिखा— "आप बच्चों के अंतरंग जीवन में घुल–मिलकर रहने से कितनी प्रसन्नता होती है, इसे शब्दों में कैसे व्यक्त करें? आप हमारे सगे बेटे की तरह हैं। यह संबंध अनेक जन्मों की साधना द्वारा प्रगाढ़ हुआ है। आप अनेक जन्मान्तरों तक हमारे स्नेह सूत्र में ऐसे ही बंधे रहेंगे। हमारा वात्सल्य वर्षा की तरह आप दोनों पर निरंतर बरसता रहेगा।"

वंदनीया माताजी के लिखे इन पत्रों में अद्वितीय स्नेह और वात्सल्य की झलक मिलती है। उनके शब्दों में आत्मीयता की गहराई और मातृभाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है, जो जीवन भर प्रेरणा प्रदान करता है (ऋषि युग्म की झलक–झाँकी, 2014)।

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी के अनुसार वंदनीया माताजी में निहित मातृतत्व

पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने अपने वाङ्मय में माताजी के प्रति अपनी गहरी श्रद्धा और स्नेह व्यक्त करते हुए लिखा— "मिशन को बढ़ाने में माताजी ने केवल हमारे बाएं या दाएं हाथ की भूमिका नहीं निभाई, बल्कि उन्होंने इसका हृदय स्वरूप ग्रहण किया। उन्हीं की भावनाओं के संचार से यह मिशन पल्लवित और विकसित होता रहा। औरों की तरह हम भी उनके प्रेम और स्नेह से धन्य हुए हैं, अन्यथा इतने आघातों के बीच कौन जानता, कब हम टूट–बिखर कर चकनाचूर हो गए होते।"

एक अन्य स्थान पर वे माताजी के भावनात्मक स्नेह और मातृभाव को दर्शाते हुए कहते हैं— "वे पूर्णतः भावमयी हैं, उनका प्रेम उनके रोम–रोम में समाया हुआ है। उन्हें हमारी तरह वाक्पटुता नहीं आती, परंतु ममता लुटाने में वे हमसे कहीं आगे हैं। भले ही वे बौद्धिक चातुर्य की धनी न हों, किंतु उनके पास ममता की पूँजी हमसे कई गुना अधिक है। इसी कारण हम उन्हें सजल श्रद्धा कहते हैं। मिशन के प्रत्येक परिजन ने उन्हें इसी रूप में अनुभव किया है" (ब्रह्मवर्चस, 2013) ।

माता भगवती देवी शर्मारू मातृशक्ति की प्रेरणास्रोत

वर्तमान शोध पत्र में मातृतत्व के विशेष संदर्भ में माता भगवती देवी शर्मा के जीवन वैशिष्ट्य का विश्लेषण किया गया है। उन्होंने न केवल अपने संपूर्ण मातृत्व भाव से गायत्री परिवार की स्थापना, संचालन और संरक्षण किया, बल्कि समाज के नैतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक उत्थान में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। ब्रह्मवर्चस (2010) ने उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं का

उल्लेख किया है, जिसमें उनका बाल्यकाल, दांपत्य जीवन, संगठन संचालन, संस्कृति संवेदना, और आध्यात्मिक मार्गदर्शन शामिल हैं।

माताजी ने अपने जीवन में अनेक आदर्शों को अपनाया, जिसमें आदर्श गृहणी, आदर्श माता, आदर्श तपस्विनी, आदर्श योग साधिका, शक्तिस्वरूपा, भारतीय नारी के महान आदर्शों की प्रतिमूर्ति, और शिष्यों की मार्गदर्शक के रूप में उनका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण रहा। उन्होंने श्री माँ सारदा देवी के समान मातृत्व को संगठन की धुरी बनाया और अपनी मातृभावना से समाज को एक नई दिशा दी। उनके जीवन में मातृत्व के विविध आयाम स्पष्ट रूप से देखे जा सकते हैं— आध्यात्मिक मार्गदर्शक के रूप में माँ, गुरुरूप में माँ, वात्सल्यमयी माँ, भक्तवत्सला माँ, विश्व की पीड़ा हरने वाली माँ, दयामयी माँ, अन्नपूर्णा माँ और भावमयी माँ।

उनका जीवन एक संपूर्ण और सर्वांगीण आदर्श का प्रतिरूप है, जिसका अनुसरण सभी जीवन अवस्थाओं में किया जा सकता है। इस शोधपत्र में उनके जीवन को मातृतत्व के विशेष संदर्भ में देखने और विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है। उनकी जीवन यात्रा में अनेक महत्वपूर्ण पहलुओं का समावेश रहा जैसे– बाल्यकाल साधना, आचार्य श्री की लीला सहचरी, समर्पण और जिम्मेदारियों का निर्वहन, आदर्श नारी एवं नारी जागरण अभियान, लेखन कार्य, अखण्ड ज्योति पत्रिका का संपादन, संरक्षिका के रूप में कार्य, देव संस्कृति दिग्विजय अभियान की प्रणेता, आदि।

निष्कर्ष

माता भगवती देवी शर्मा का जीवन इस तथ्य का प्रमाण है कि मातृत्व केवल परिवार तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह संपूर्ण समाज और मानवता के उत्थान का सशक्त माध्यम बन सकता है। उनके योगदान ने नारी सशक्तिकरण, सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक उन्नति को प्रेरित किया। गायत्री परिवार के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध किया कि मातृत्व केवल स्नेह और प्रेम नहीं है, बल्कि यह संरक्षण, पोषण और समाज को सकारात्मक दिशा देने का आधार भी है। उनकी त्याग, करुणा और मातृ भावना से प्रेरित मिशन आज भी लाखों लोगों को मार्गदर्शन प्रदान कर रहा है।

माताजी ने समाज में व्याप्त बुराइयों को समाप्त करने के लिए एकता, ममता और शुचिता को आधार बनाकर समाज सुधार की दिशा में कार्य किया। उनके निर्दिष्ट कर्मों से यह स्पष्ट होता है कि प्रेम, सेवा और मातृत्व के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन संभव है। गायत्री परिवार की आधारशिला, इसके सहयोग, सहकारिता और आत्मीयता का मुख्य सूत्र माताजी का प्रेम ही है। अतः माता भगवती देवी शर्मा का जीवन मातृतत्व के उत्कृष्ट आदर्श के रूप में देखा जा सकता है। उनका जीवन दर्शन हर व्यक्ति को प्रेरित करता है कि स्नेह, सेवा और त्याग से समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है।उनका मार्गदर्शन मानवता के सार्वभौमिक उत्थान का मार्ग प्रशस्त करता है, जिससे व्यक्ति एक श्रेष्ठ जीवन जी सकता है और सामाजिक उत्थान की दिशा में योगदान दे सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पाण्डेय ई श. शक्ति स्वरूपा वंदनीया माता जी. युग निर्माण योजना, 2017, 14
2. शर्मा एस. परिवर्तन के महान क्षण (प्रथम संस्करण). युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, 2011.
3. पण्ड्या प. अखण्ड ज्योति. अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 2002.
4. पण्ड्या प. आत्मीयता ममता करुणा यही थी उनकी उपासना. अखण्ड ज्योति, 1995, 33.
5. पण्ड्या प. अखण्ड ज्योति. अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 1995.
6. शर्मा भ द (Ed.). अखण्ड ज्योति के उत्तरदायित्वों में परिवर्तन. अखण्ड ज्योति, 1959, 4.
7. शर्मा भ द (Ed.). भले हो दूर पर माँ के हृदय का प्यार पाओगे. अखण्ड ज्योति, 1993, 46.
8. ब्रह्मवर्चस. युग दृष्टा का जीवन दर्शन. अखण्ड ज्योति संस्थान, मथुरा, 2013.
9. ब्रह्मवर्चस (Ed.). ममत्व लुटा कर ही मातृसत्ता ने यह विराट परिवार बनाया. युग दृष्टा का जीवन दर्शन, 2013, 10-4.
10. ब्रह्मवर्चस. महाशक्ति की लोकयात्रा. युग निर्माण योजना विस्तार ट्रस्ट, मथुरा, 2010.
11. म म शांतिकुंज (Compiler). ऋषि युग्म की झलक–झाँकी (पुनरावृत्ति संस्करण खंड 1). श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टी एम डी), शांतिकुंज, हरिद्वार, 2014.